६७ अनुगमन-३: कारण से महाकारण

दिनांक -०८-०३-२०१२

महाकारण का मतलब सह-अस्तित्व ही है | सह-अस्तित्व सहज ज्ञान में पारंगत होना, पारंगत होने का प्रमाण, परम्परा में प्रस्तुत करना, महाकारण परम्परा का मतलब इतना ही है | अनादि काल से मानव सत्य का शोध में लगा है | सत्य शोध में बंदर, भालू, बाघ और गाय क्यों नहीं लगा? इसका शोध में यह स्पष्ट हुआ है कि विकल्प विधि से मानव ज्ञानावस्था में है | यह सह-अस्तित्व विधि से विदित है | भ्रमित अवस्था में भी मानव में कल्पनाशीलता, कर्मस्वतंत्रता रखा है इसलिए मानव शोध करता ही रहता है | इसके साथ ही मेधस तंत्र बन चुका है | मेधस तंत्र के सहारे मानव कल्पनाशीलता, कर्म स्वतंत्रता का उपयोग करता ही है | इसका मुख्य बात यही है कि मानव ज्ञानावस्था में है | मानव परम्परा विधि से प्रजनन कार्य पूर्वक, मेधस तन्त्र यदि विकसित नहीं होता है कार्य कारणों के आधार पर, तब तक प्रयोग नहीं कर सकता इसमें मानव का कोई हाथ नहीं है | यह केवल नियति विधि से है | नियति विधि का तात्पर्य सह-अस्तित्व विधि है | सह-अस्तित्व का तात्पर्य सत्तामयता में सम्पृक्त जड़ चैतन्य प्रकृति है | सम्पृक्त रूप में डूबे, घिरे, भीगे रहने का कार्यक्रम नियति विधि से बनी है | भीगे रहने के फलपरिणाम स्वरूप मानव में चेतना, जड़ प्रकृति में ऊर्जा के नाम से उपलब्ध है | सत्तामयता यथावत है | सत्तामयता में ही मानव डूबे रहने मे भीगे रहना देखा गया है | इसी विधि से हर मानव चेतना सम्पन्न है |

चेतना ही चार प्रकार से गण्य होता है | यह जीव चेतना, मानव चेतना, देव चेतना, दिव्य चेतना के रूप में है जिसमें से एक भाग को छोड़कर अन्य तीनों भाग विकसित चेतना कहलाते हैं | इसको विकल्प विधि से अध्ययन करने पर जीव चेतना से मानव चेतना श्रेष्ठ, मानव चेतना से देव चेतना श्रेष्ठतर, देव चेतना से दिव्य चेतना श्रेष्ठतम है यह समझ में आता है | कल्पनाशीलता, कर्मस्वतंत्रता का तृप्ति इसी स्थली में होना देखा गया है | इसी को विकल्प विधि नाम से शिक्षापूर्वक प्रस्तुत किया गया है | इसी का नाम है चेतना विकास | मूल्य शिक्षा विधि से मानव में साक्षात्कार ज्ञान, अवधारणा ज्ञान, बोध रूप में ज्ञान होना होता है | मूल्य प्रकृति सहज हैं | पदार्थावस्था, प्राणावस्था, जीवावस्था, ज्ञानावस्था में रूप गुण स्वभाव धर्म ही मूल्यों के रूप अध्ययनगम्य है | इस ढंग से विकसित चेतना पूर्वक मानव अथ से इति तक समझदार होना होता है | रहना परम्परा के रूप में ही होता है | जीव चेतना जीव संसार में भी होता है | मानव का विशेषता यही है कि मानव जीव चेतना में जीते हुए जीवों से अच्छा जीने का प्रयत्न किया है, इसमें सफल हो गया है |

यह सफलता बिंदु पर्यंत मानव में नकारात्मक भाग ज्यादा हो गया है, सकारात्मक भाग कम हो गया है | सकारात्मक भाग केवल दूरसंचार है बाकी सब नकारात्मक भाग है | इसका गवाही में धरती बीमार होना, प्रदूषण छा जाना, मानव में अपराध प्रवृत्ति विपुल होते जाना देखने को मिलता है | वर्तमान का अध्ययन क्रम में लाभोन्माद, भोगोन्माद, कामोन्माद का प्रचलित होना और संघर्ष, युद्ध को नैतिकता मानना है | इसमें से संघर्ष और युद्ध प्राचीन काल से रहा है | इसका अर्वाचीन काल से प्रयत्न रहा है | अर्वाचीन काल जंगल युग से शुरू होता है | जंगल युग का समाप्ति होते तक प्राचीन काल शुरू होता है | प्राचीन काल का अवसान होते तक आधुनिक काल शुरू होता है | यह सब बातें स्मरण में आने से हम यह निष्कर्ष निकाल सकते हैं कि अत्याधुनिक काल भी अपने अवसान स्थिति में आ रहा है | इसका भी विकल्प आ चुका है | इसके विकल्प रूप में चेतना

विकास मूल्य शिक्षा ही है | इसमें प्रश्न यह बनता है कि इसके बाद कोई प्रस्ताव नहीं होगा क्या? इसका उत्तर बनता है कि यदि दूसरा विकल्प होता है तो अनुसंधान होगा ही | ऐसा अनुसंधान वर्तमान से अच्छा ही होगा | इसका गवाही है, जो चेतना विकास मूल्य शिक्षा का प्रस्ताव प्रस्तुत है | भौतिकवाद, आध्यात्मवाद के प्रयोग सम्पन्न होने के बाद भी खराब लगने वाला भाग ज्यादा हो गया है | यह चेतना विकास के आधार पर जाँचने पर हुआ | चेतना विकास मूल्य शिक्षा का अध्ययन का प्रस्ताव आया है | कुछ लोगों का अध्ययन का मन बना है | यह सब सोचने पर पता लगता है कि (यदि) चेतना विकास मूल्य शिक्षा के बाद जो प्रस्ताव आयेगा वह अच्छा ही होगा | इसमें मानव का हित ही होगा |

आदर्शवाद स्थापित होने पर, आदमी जंगल को कम किया, जंगल के साथ अपराधिक प्रवृत्ति बढता गया, जिससे समस्याएं तैयार हुई | इसके निवारण के लिये अत्याधुनिक युग अर्थात विज्ञान युग शुरू हुआ तथा धरती के साथ अपराध प्रवृत्ति बढ गया | इसके साथ चेतना विकास मूल्य शिक्षा के प्रस्ताव में जाँच सकते हैं कि इसमें अपराध प्रवृत्ति तो नहीं | न ही जंगल के साथ और न ही खनिज के साथ | भौतिकवाद, आध्यात्मवाद के साथ जंगल और जमीन के साथ अथवा धरती के साथ अपराध प्रवृत्तियां प्रबल हुई हैं | इन दोनों विधियों से मुक्त होने की विधि दृष्टिगोचर नहीं हुआ तभी विकल्प प्रस्तुत है | विकल्प विधि से समाधान, समृद्धि, अभय, सह-अस्तित्व परम्परा में पाया जाता है | यही विकल्प का परिणाम है | यही सह-अस्तित्व को परम्परा में प्रमाणित करना ही विकल्प है | इसे ही अंतिम सत्य माना है |

सर्वशुभ हो! जय हो! मंगल हो! कल्याण हो!

ए. नागराज